ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-2, No.-2, **PP-97-99**,YEAR-2015

शकुन अपशकुन का रहस्य

❑ **गोपालदास तिवारी**

सारांश– *अथर्व–परिशिष्टान्तर्गत 50 से 72 परिशिष्टों में विविध शकुन–अपशकुनों पर प्रकाश डाला गया है। अन्य परिशिष्टों में भी शकुन–अपशकुनों का वर्णन प्राप्त होता है। अन्यान्य नक्षत्रों में विविध पदार्थ खाने, दान, जल में, मिश्रित कर स्नान से सम्बद्ध कृत्य, कार्य सिद्धि के लिये किये जाने का विधान 'नक्षत्र कल्प' परिशिष्ट' में प्राप्त होता है। दिक् प्रस्थान कालिक शकुन वर्णन भी उपलब्ध है।[2] सैन्य संगठन काल में तथा युद्ध हेतु प्रयाणकाल में होने वाले शकुनों का वर्णन भी उपलब्ध है। सूर्यचन्द्र के विभिन्न वर्णों तथा दशाओं के अनुसार शकुन–अपशकुनों का उल्लेख भी उपलब्ध है। प्रतिपदा के चन्द्र की प्रकृति के विकृत हो जाने से राष्ट्रनायक की मृत्यु हो जाती है। षष्ठी तथा अष्टमी तिथि में चन्द्रमा के विकृत दीखने पर राजविषयक अपशकुन होते हैं।[3] चन्द्रमा के हरितवर्णी दीखने से फसल हानि, कृष्णवर्णी होने से शूद्र, पीतवर्णी होने से वैश्य, अरुण वर्णी होने से क्षत्रियों का वध होना कहा गया है। श्वेत वर्णी चन्द्र होने पर विप्र वर्ण की वृद्धि होती है। वर्णानुसार अन्य शकुनों का वर्णन उपलब्ध होता है।[4] दो चन्द्र दृश्य होने से युद्ध होगा तथा बहुलता में ब्राह्मण वध, दो सूर्य दृश्य होने से भी युद्ध होगा तथा क्षत्रिय वध होगा। अस्तकालीन रवि के पीतवर्णी हो जाने पर युद्ध में भीषण संहार होता है या प्रलय हो जाती है।*

वृहत्संहिता के पंचम व सैंतीसवें अध्याय में सूर्य चन्द्र लक्षणानुसार शकुन–अपशकुनों का वर्णन प्राप्त होता है। कौशिक सूत्रान्तर्गत तेरहवें अध्याय में चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण से सम्भव अपशकुनों की शान्ति का उल्लेख प्राप्त होता है। अथर्व परिशिष्ट में भी ग्रहण पर होने वाले अन्यान्य परिणामों का संकेत 'राहुचार' में हुआ है।

ग्रहों के प्रभाव से शकुन–अपशकुन– नवग्रहों का जिसके साथ स्निग्धत्व होता है उसके साथ मिलाप हा जाने पर जय तथाविरुद्ध ग्रह के मिल जाने पर अपशकुन होते हैं। अंगारक की पराजय से युद्ध तथा रजोवृष्टि होती है। केतु के पीड़ित होने पर आक्रमण हो जाता है। सर्पों में युद्ध होने पर संग्राम होता है।[5] बुध,चन्द्र, शुक्र, शनि, मंगल, ग्रहों में सौख्य हो जाने पर चन्द्र प्रदक्षिणा से शुभ होता है। चन्द्रमा में जो भी उत्पात होते हैं, दक्षिणा हवन, द्वारा शान्त करने का विधान अथर्वपरिशिष्ट में प्राप्त होता है। वृहत्संहिता (ग्रहयुद्धाध्याय) में भी ऐसा ही वर्णन है। 'केतुचार' परिशिष्ट 54 में केतु की आकृति, वर्ण के अनुसार उत्पातों का उल्लेख किया गया है। जिस देश में केतु शीश होता है, वहाँ घोर अनिष्ट होता है।[6] वृहत्संहिता के केतुचाराध्याय से भी इस परिशिष्ट की अति समता है।

भूकम्प से शकुनापशकुन का ज्ञान– भूकम्प से उल्कापात, अकायिक ध्वनि, देवकम्पन होता है। अग्नि या ज्वालामुखी से होने वाले भूकम्प से रोग, जलाशय ह्रास, अवर्षा, वृक्ष निष्फल, गायें दूध कम देती हैं।[7] इससे सम्बन्धित शकुन दो माह अवधि पर्यन्त प्रभावी होते हैं।

दिग्दाह से सम्बद्ध शकुन– दिग्दाह के वर्णों के अनुसार शकुनों का विवेचन हुआ है। श्वेत, रक्त, पीत, कृष्ण वर्ण का दिग्दाह हो तो क्रमशः ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र जाति का ह्रास होता है। अन्धकार, धूल एवं धुएँ के वर्ण का दिग्दाह अशुभ है।[8] रक्त दिग्दाह से शस्त्रभय, पीत से व्याधि, अग्नि वर्णी दिग्दाह से अग्नि भय उत्पादक होता है। वृहत्संहिता के दिग्दाहलक्षणाध्याय में भी ऐसा ही संकेत हुआ है।

शोधछात्र–संस्कृत,महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय, विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना, (म.प्र.) भारत

उल्काएँ जहाँ गिरती हैं अनेक प्रकार के भय उत्पन्न करती हैं। शूल, बरछी, मुद्गर, तलवार और अश्व पर गिरी उल्का भयावह होती है। पद्म, शंख, वज्र, सर्प, मछली और ध्वजा पर उल्कापात शुभ है। बिल्ववृक्ष पर गिरने से शुभ होता है। पूजास्थल पर गिरने पर राष्ट्र के लिये भय, नगर द्वार पर गिरने पर नगर के लिए भय, घर पर गिरने से गृहस्वामी के लिए भय होता है। गोशाला में गिरने से गायों के लिए भय, बिजली के घर्षण से शत्रुओं से भय होना कहा गया है।[9] आकृति, वर्ण, ध्वनि, गति के आधार पर उल्का के प्रभाव का वर्णन अथर्व परिशिष्ट के 'उल्कालक्षणम्' के अन्तर्गत हुआ है।[10] जो वृहत्संहिता के उल्कालक्षणाध्याय के समान है।

विद्युत से शकुन बोध– यदि आषाढ़ शुक्ल पक्ष की चतुर्थी, पंचमी को विद्युत दिखने पर मंगल होता है। आग्नेय में विद्युत तथा उसी दिशा में वायु चलने पर व्याधि, सर्वदिक् विद्युत दृश्य होने पर अधिक जल का भय, साथ ही पूर्वोत्तर दिक् बादल दृश्य होने पर अच्छी वर्षा होती है। ऐन्द्रा दिक् में विद्युत दीखने साथ ही वायु के उसी दिशा में चलने से आरोग्य, समृद्धि और कल्याण की उपलब्धि होती है।[11] मत्स्य, ऊँट, वराह, वृक, बगुला, गधा और शशक की आकृति के मेघ दिखायी देने पर वृष्टि होती है। स्वर्ण, अग्नि के वर्ण के बादल दिखाई पड़ने तथा कुत्ता, गधा, गीदड़, गिद्ध, काक की ध्वनि सुनाई देने से जनसंहार होना कहा गया है। सायंकाल मेघो में मोर, कमल तथा नीली कांति दिखाई देने पर अत्यधिक वर्षा होगी, इसी तरह अन्य रंगों के बादल दृश्य होने पर वर्षा हेतु शुभ होते हैं।[12]

राष्ट्र विनाशक अपशकुन– किसी जीव के विरुद्ध योनि में जन्म लेने पर, हाथ, पैर, आँख और सिर आदि अंगों न्यूनाधिक्य होने पर, गतिहीन पदार्थों के सक्रिय हो जाने पर, चल पदार्थों के अचल हो जाने पर, बाचाल के मूक और मूक के बोलने लगने पर, निरग्नि स्थल पर अग्नि दिखायी देने पर असमय पुष्प तथा फसल होने पर, देव प्रतिमाओं में विचित्रता, वृक्षस्राव, दिशाओं के धूमवर्ण होने, आकाश के धूल घूसरित होने पर, सूर्य चन्द्र के कलुषित हो जाने पर राजा और राष्ट्र के लिये भय होता है।[13] इन्द्रध्वज, स्तम्भ के नष्ट हो जाने पर, वृक्षों के शुष्क होने पर, लताओं के सूख जाने पर, वाद्यों के निःशब्द हो जाने पर, रात्रि में भयंकर रुदन सुनाई पड़ने पर, बिना बादल वर्षा होने पर अपशकुन होता है। ये सब उत्पात जिस देश में होते हैं उस देश के राजा तथा प्रजा का विनाश होता हैं। गर्गाचार्य ने भी राष्ट्र सम्बंधी अपशकुनों का उल्लेख किया है।[14]

दुर्भिक्ष

धान्य राशि में कम्पन होने पर, उलूखल और मूसल के आपस में संसर्ग से, बर्तनों के स्वयं क्रियान्वित होने पर, मृग पक्षियों के कमल नाल का भक्षण करने पर, नगर द्वार पर बकवत् काकों के व्यवहार करने पर, फसल और अन्न के जलते दिखाई पड़ने पर उस देश में अत्यधिक भय होता है।[15] शस्त्रों के परस्पर घर्षण से, अमानुषी चीजों के मनुष्यों के समान व्यवहार करने पर युद्ध होता है। उस देश के महान शस्त्र कोप को जानना चाहिये। [16] सियारों का श्मशानों में जोर से रोना जिस नगर ग्राम में सुनाई देता है वहाँ अत्यधिक भय होता है।[17] अश्वत्थ, उदुम्बर, चम्पक के पुष्प के वर्ण वाले श्वेत, अरुण पीत, कृष्ण वर्ण के इन्द्र धनुष दृष्टिगत होने पर देवग्रहों तथा क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रों के लिये भय होता है।[18] शिशिर ऋतु में हिमपात, वायु के उत्पात, अन्यान्य प्रकार के अद्भूत, कृष्ण वर्ण मेघ, पीतवर्णी तारा व उल्कापात होने पर चित्रा नक्षत्र में स्त्रियों, गाय, बकरी, मृगी के गर्भ धारण करने पर, लताओं के अंकुरित होने पर शुभ होता है। लताओं और अन्न के रस पूर्ण होने पर, फल पुष्पों के मधुपूर्ण होने पर, गो, पक्षी, कलरव भ्रमर के गुंजार करने पर शुभ होता है। जलाशय में जल वर्ग बढ़ जाने पर कल्याणकारी होता है। आकाश से अद्भुत ध्वनि सुनायी देने पर, दशो–दिशाओं में ग्रहों के दिखायी पड़ने पर शुभ होता है। शरद् ऋतु में सभी अपशकुनों का नाश हो जाता है। शीतल वायु कोहरे, खग कलरव, यक्षा दिदर्शन, धूम्र युक्त दिशायें, ऊँचे बादल आदि हेमन्त ऋतु में कल्याणकारी होते हैं।[19] वृहत्संहिता के 45वें अध्याय में भी ऐसा ही कहा गया है। जिसके घर पर उल्लू, गिद्ध आदि खग आकर बैठते हैं, कपोत प्रवेश करते हैं उसके लिए अशुभ होता है। धुरी टूट जाने, स्त्री से विकृत बच्चे के जन्म होने पर, घोर स्वप्न दिखाई देने पर यम शकुन

होता है। इसके प्रतीकार के लिए हवन करना चाहिए।[20] परिशिष्ट 19 इन्द्रमहोत्सव में भी इस प्रकार के अपशकुनों में भी इस प्रकार के अपशकुनों का उल्लेख है। पिपीलिका बिल, मधुमक्खी का छत्ता जिसके घर में हो, जल में तेल स्थिर दिखे, मणि में ध्वनि हो, दधि दुग्ध के विकृत हो जाने, बोये हुए बीजों में एकाएक कीट लग जाने, पर अशुभ होता है, इसके प्रतिकार के लिए वारुणी विधि से हवन करने का निर्देश प्राप्त होता है।[21] बिना आग घर से धूम्र निकलने, चिनगारियों के निकलने, छत्र, ध्वज, पताका, आसन, वस्त्र जलने, असमय दिशाओं के जलने, पशुओं के मद्युक्त होने पर अशुभ होता है। इसके प्रतीकार के लिए स्थालीपाक हवन करना चाहिये।[22] स्वर्ण, रजत, वज्र, वैदूर्य, मोती, मूँगे के नष्ट हो पाने पर कार्य सिद्धि नहीं होती। प्रतीकार के लिए यक्षदेव हेतु चरू का हवन करना चाहिए।[23] तूणीर से बाणपात होने पर, निःशब्द वाद्य बज पड़ने पर अशुभ होता है। प्रतीकार हेतु चरू से याग करना चाहिए।[24] प्रचण्डवायु से गज, महिष, गर्दभ, व्याघ्र, सिंह में विकृतियाँ होने पर वायु सम्बंधी अपशकुन होता है। इसके लिए वायुदेव हेतु स्थालीपाक का हवन करने का निर्देश है।[25] अथर्वहृदयम्, भार्गवीयाणि, गार्ग्याणि, वार्हस्पत्यानि, औशनसाद्भुतानि आदि परिशिष्टों में शकुन–अपशकुनों का वर्णन हुआ है। अथर्वपरिशिष्ट'स्वप्नाधय' में स्वप्नक्रम के आधार पर शकुनों का उल्लेख हुआ है।[26]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दध्योदन भुक्त्वा कृत्तिकाभिरभ्युदियात्सिद्धाथो हवैपुनरागच्छति', अथर्वपरिशिष्ट 1–27.32, 1.43–45
2. 'सश्वेतसक्तुकांसश्च प्राचीनार्थस्य मंगलम्' वही, 1.35
3. 'षष्ठ्यां मध्ये यदागच्छेद्राजा वध्येत पार्थिवः', वही, 50.3.3–5.4
4. 'स्निग्ध : पीत : सुवर्णाभः पक्षादौ यदि चन्द्रमा,वही 50.6.1–5
5. 'आक्रान्तं समनुभवन्ति यायिसंघा बध्यन्ते यदि भवेत परस्परोऽहि घातः', वही 51.5.2
6. ''यस्मिन्देशे शिरस्तस्स सदेशः पीड्यते भृशम्', वही, 54.2.1
7. 'आग्नेयं तद्विजानीयाद्दुर्भिक्षं चात्र निर्दिशेत्', वही 57.1.3–8
8. 'सपीत परुषश्यामा ये च वारुण संनिभाः।' 58.1.10
9. 'एतासामिन्द्र शिरसि पतनं नृपतेर्भयम्' वही, 58 ख 4.1–4
10. 'तिर्यगाराजपत्नी' च श्रेष्ठिनः प्रतिलोमिनी', वही 58.4.6–16
11. 'ऐन्द्रयां चेत्स्यन्दते विद्युदैन्द्रस्थचापि मारुतः' 59.14–5.
12. 'सविद्युत्धनुष्कश्च सघोषः शिखिसंनिभः' वही, 61.1.13–18
13. वही, 64–3.2–4.8
14. 'शोणितास्थु परिश्रावः प्रहासो द्वीक्षणक्रिया।' वही, 64.6.2–7.7
15. 'त्यजन्ति वापि यं देशे पाषण्डा द्विजदेवता।' वही,64.4.9–5.5
16. 'शस्त्रज्वलन संसर्प : स्थूणीसरणपूरणम्' वही, 64.5.6–6.1
17. 'संध्या दण्ड परिवेषा रजोऽर्क परिघादाः।' वही, 64.7.8–8.2
18. अश्वत्थोदुम्बरलक्षन्यग्रोधे कुसुमोद्भवः।' वही, 64.8.3–4
19. 'हिमपातानिलोत्पाता विकृताद्भुत दर्शनम्', वही 64.8.9–10.1
20. गृहेयस्यपतेद्गृध उलूको का कथंचन्। वही, 67.3
21. उद्दीपिका गृहे यस्य बल्मीका मधुजालकम्। वही, 67.2.1–5
22. 'अनग्निरुत्थितो यस्यधूमो वापि गृहे क्वचित्।' वही 67.4.1
23. 'सुवर्ण रजतं वज्रं वैडूर्यं मौक्तिकानि च।', वही 67.5
24. 'अथयस्य स्वनक्षत्रे उल्कानिर्घात एव वा।' वही 67.6
25. अतिवातो यत्र भवेद्रूपं वा यत्र वैकृतम्। खर मकर महिषा वराहा व्याघ्रसिंहकाः।, वही 67.7
26. 'ग्रहणीतसमुद्रगेन्द्विन्द्रवायवग्न्यर्क नदीं क्षितिम्। समुद्रं वहिनीं द्वीपं लङ्घयेद्वा वसुंधराम्।' वही 68.2–5.14

*****